"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: May 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

सशस्त्र सेनाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव

डॉ. राम प्रसाद यादव, सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने सशस्त्र सेनाओं के संचालन, संचार और रणनीतियों पर गहरा प्रभाव डाला है। यह न केवल सूचना प्रसार और जनसंपर्क का माध्यम बना है, बल्कि साइबर सुरक्षा, खुफिया अभियानों और मनोवैज्ञानिक युद्ध में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया का हमारी सशस्त्र सेनाओं के लिए सदैव सकारात्मक भूमिका रही है। सोशल मीडिया सैन्य बलों को अपनी गतिविधियों और अभियानों की जानकारी साझा करने, नागरिकों और सैनिकों के बीच संवाद स्थापित करने और भर्ती अभियानों को सशक्त बनाने में मदद करता है। संकट प्रबंधन और आपदा राहत अभियानों के दौरान, सोशल मीडिया के माध्यम से त्वरित संचार सम्भव होता है, जिससे नागरिकों को सहायता पहुँचाने में आसानी होती है। हालाँकि, सोशल मीडिया नकारात्मक प्रभावों से भी मुक्त नहीं है। सैन्य कर्मियों द्वारा सोशल मीडिया के अनुचित उपयोग से संवेदनशील जानकारी लीक होने का खतरा बढ़ जाता है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को गंभीर नुकसान हो सकता है। इसके अलावा, विरोधी शक्तियाँ दुष्प्रचार और साइबर हमलों के माध्यम से सैन्य प्रतिष्ठानों को नुकसान पहुँचा सकती हैं। सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहें और फेक न्यूज भी सैनिकों के मनोबल और जनभावना को प्रभावित कर सकती हैं। इन जोखिमों को देखते हुए, सशस्त्र सेनाओं को सोशल मीडिया के प्रभावी प्रबंधन के लिए मजबूत नीतियाँ अपनाने की आवश्यकता है। साइबर सुरक्षा उपायों को सुदृढ़ करना, सैनिकों को प्रशिक्षित करना, और सोशल मीडिया उपयोग के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश बनाना आवश्यक है। उचित नियंत्रण और रणनीति के साथ, सोशल मीडिया को सैन्य अभियानों और राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः सोशल मीडिया कॉपीराइट, जियोटैगिंग, न्यायालय–मार्शल, जनसम्पर्क।

सशस्त्र सेनाओं पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव

डिजिटल युग में, सोशल मीडिया ने हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है, जिसमें सशस्त्र सेनाएँ भी शामिल हैं। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों ने सैन्य संगठनों को नई संभावनाएँ प्रदान की हैं। ये प्लेटफॉर्म न केवल संचार और सूचना प्रसार के साधन बने हैं, बल्कि रणनीतिक संचार, जनसंपर्क, और मनोवैज्ञानिक अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संचार और सूचना प्रसार में सुधार : सोशल मीडिया ने सशस्त्र सेनाओं के लिए त्वरित और व्यापक संचार को संभव बनाया है। आधिकारिक घोषणाएँ, प्रेस विज्ञप्तियाँ, और आपातकालीन सूचनाएँ अब सीधे जनता तक पहुँचाई जा सकती हैं। इससे पारदर्शिता बढ़ती है और नागरिकों का विश्वास मजबूत होता है। उदाहरण के लिए, संकट या आपदा की स्थिति में, सोशल मीडिया के माध्यम से त्वरित जानकारी साझा करना सम्भव होता है, जिससे प्रभावित लोगों को समय पर सहायता मिलती है।

जनसम्पर्क और छवि निर्माण : सशस्त्र सेनाएँ सोशल मीडिया का उपयोग अपनी सकारात्मक छवि बनाने और बनाए रखने के लिए कर रही हैं। सैनिकों की वीरता, मानवीय प्रयास, और प्रशिक्षण गतिविधियों के बारे में पोस्ट करके, वे जनता के साथ एक मजबूत सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इससे नागरिकों में गर्व और सम्मान की भावना बढ़ती है। इसके अलावा, सोशल मीडिया अभियानों के माध्यम से, वे युवाओं को सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं।

भर्ती और जागरूकता अभियान : सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने भर्ती प्रक्रियाओं को अधिक सुलभ और प्रभावी बना दिया है। विभिन्न अभियानों के माध्यम से, सशस्त्र सेनाएँ सम्भावित उम्मीदवारों तक पहुँचती हैं, उन्हें आवश्यक जानकारी प्रदान करती हैं, और सेना में शामिल होने के लाभों के बारे में जागरूक करती हैं। इससे योग्य और उत्साही युवाओं को आकर्षित करने में मदद मिलती है।

मनोवैज्ञानिक संचालन और रणनीतिक संचार : सोशल मीडिया मनोवैज्ञानिक संचालन का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है। सशस्त्र सेनाएँ इसका उपयोग दुश्मन के मनोबल को कमजोर करने, गलत सूचना का मुकाबला करने, और अपने संदेशों को प्रभावी ढंग से प्रसारित करने के लिए करती हैं। इससे न केवल दुश्मन की रणनीतियों को विफल किया जा सकता है, बल्कि अपने सैनिकों और नागरिकों के मनोबल को भी ऊँचा रखा जा सकता है।

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: May 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

सैनिकों और उनके परिवारों के बीच सम्पर्क : सोशल मीडिया ने सैनिकों और उनके परिवारों के बीच सम्पर्क को मजबूत किया है। दूरस्थ तैनाती के दौरान, ये प्लेटफॉर्म परिवारों को अपने प्रियजनों के साथ जुड़े रहने में मदद करते हैं, जिससे मानसिक समर्थन मिलता है और तनाव कम होता है। इसके अलावा, सैनिकों के परिवारों के लिए विशेष समूह और पेज बनाए गए हैं, जहाँ वे अपनी समस्याएँ साझा कर सकते हैं और आवश्यक सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता : आपदाओं और संकटों के दौरान, सशस्त्र सेनाएँ सोशल मीडिया का उपयोग राहत कार्यों के समन्वय और सूचना प्रसार के लिए करती हैं। इससे प्रभावित क्षेत्रों में त्वरित सहायता पहुँचाने और जनता को आवश्यक निर्देश देने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, बाढ़ या भूकम्प जैसी आपदाओं के समय, सोशल मीडिया के माध्यम से राहत शिविरों की जानकारी, बचाव कार्यों की प्रगति, और आवश्यक सावधानियों के बारे में जानकारी साझा की जाती है।

राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा : सशस्त्र सेनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करती हैं। राष्ट्रीय त्योहारों, विजय दिवस, और अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर पोस्ट और वीडियो साझा करके, वे नागरिकों में देशप्रेम की भावना को मजबूत करती हैं। इसके अलावा, सैनिकों की कहानियाँ और बलिदान साझा करके, वे समाज में एकजुटता और सम्मान की भावना को बढ़ावा देती हैं।

इस प्रकार सोशल मीडिया ने सशस्त्र सेनाओं के संचालन, संचार, और जनसम्पर्क में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। इसके माध्यम से, वे न केवल अपनी छवि को सुदृढ़ कर रही हैं, बल्कि नागरिकों के साथ मजबूत सम्बन्ध भी स्थापित कर रही हैं। हालांकि, इसका प्रभावी और सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित करने के लिए उचित नीतियाँ और प्रशिक्षण आवश्यक हैं। सावधानीपूर्वक और रणनीतिक दृष्टिकोण के साथ, सोशल मीडिया सशस्त्र सेनाओं के लिए एक शक्तिशाली उपकरण सिद्ध हो सकता है।

सशस्त्र सेनाओं पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

डिजिटल युग में, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब ने संचार के तरीके में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। हालांकि, सशस्त्र सेनाओं के संदर्भ में, सोशल मीडिया के उपयोग से कई नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। ये प्रभाव न केवल सुरक्षा और गोपनीयता से सम्बन्धित हैं, बल्कि संगठनात्मक अनुशासन, मनोबल, और सार्वजनिक धारणा पर भी असर डालते हैं।

सुरक्षा और गोपनीयता पर खतरा : सशस्त्र सेनाओं के लिए सुरक्षा और गोपनीयता सर्वोपरि हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से संवेदनशील जानकारी का अनजाने में या जानबूझकर लीक होना एक गम्भीर चिंता का विषय है। सैनिकों द्वारा स्थान, मिशन विवरण, या अन्य गोपनीय जानकारी साझा करने से दुश्मन को रणनीतिक लाभ मिल सकता है। इसके अलावा, विरोधी तत्व सोशल मीडिया का उपयोग करके सैनिकों की व्यक्तिगत जानकारी एकत्र कर सकते हैं, जिससे साइबर हमलों, ब्लैकमेल, या अन्य खतरों की सम्भावना बढ़ जाती है।

अनुशासन और पेशेवर आचरण पर प्रभाव : सशस्त्र सेनाओं में अनुशासन और पेशेवर आचरण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। सोशल मीडिया पर अनुचित या विवादास्पद सामग्री पोस्ट करने से संगठन की छवि धूमिल हो सकती है और आंतरिक अनुशासन भंग हो सकता है। इसके अलावा, सैनिकों के बीच सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत विवाद या आलोचना से टीम भावना और एकजुटता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव और मनोबल पर असर : सोशल मीडिया पर नकारात्मक टिप्पणियाँ, ट्रोलिंग, या दुष्प्रचार से सैनिकों के मनोबल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, परिवार से दूर तैनाती के दौरान सोशल मीडिया पर परिवार की समस्याओं या चिंताओं को देखने से मानसिक तनाव बढ़ सकता है, जिससे सैनिकों की कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

सार्वजनिक धारणा और मीडिया प्रबंधन : सोशल मीडिया पर सशस्त्र सेनाओं के बारे में गलत जानकारी या अफवाहें फैलने से सार्वजनिक धारणा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, सेना को अपनी छवि सुधारने और सही जानकारी प्रसारित करने के लिए अतिरिक्त संसाधनों का उपयोग करना पड़ता है। इसके अलावा, मीडिया में नकारात्मक कवरेज से भर्ती अभियानों और जनसम्पर्क प्रयासों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

नियामक चुनौतियाँ और नीतिगत प्रतिक्रियाएँ : सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को कम

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: May 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

करने के लिए, सशस्त्र सेनाएँ विभिन्न नीतियाँ और दिशानिर्देश लागू करती हैं। उदाहरण के लिए, 2020 में भारतीय सेना ने अपने कर्मियों को फेसबुक, इंस्टाग्राम सहित कई सोशल मीडिया अकाउंट्स डिलीट करने का आदेश दिया था, ताकि संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। हालांकि, इस तरह के आदेशों से सैनिकों के व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता पर भी प्रभाव पड़ता है, जिससे असंतोष और कानूनी चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इस प्रकार सोशल मीडिया के उपयोग से सशस्त्र सेनाओं के सामने कई नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं, जो सुरक्षा, अनुशासन, मनोबल, और सार्वजनिक धारणा से सम्बन्धित हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, सशस्त्र सेनाओं को संतुलित नीतियाँ अपनानी होंगी, जो सुरक्षा और गोपनीयता की रक्षा करते हुए सैनिकों के व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता का सम्मान करें। इसके अलावा, सैनिकों को सोशल मीडिया के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे संभावित खतरों से अवगत हों और संगठन की प्रतिष्ठा और सुरक्षा को बनाए रख सकें।

सोशल मीडिया और सैनिक प्रतिक्रिया

सोशल मीडिया ने दुनिया भर में संवाद और सूचना के प्रवाह को तेज कर दिया है। यह न केवल आम नागरिकों के लिए बल्कि सैन्य संगठनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। युद्ध और सुरक्षा से जुड़े मामलों में सोशल मीडिया की भूमिका तेजी से बढ़ रही है, जिससे सैनिक अभियानों, मनोवैज्ञानिक युद्ध और जनमत निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से सैन्य रणनीतियाँ लीक होने का खतरा बढ़ गया है। उदाहरण के लिए, सैनिकों द्वारा बिना सोचे–समझे पोस्ट की गई तस्वीरें या वीडियो दुश्मन को उनकी लोकेशन और योजनाओं की जानकारी दे सकते हैं। इसके अलावा, विरोधी गुट सोशल मीडिया का उपयोग दुष्प्रचार और साइबर युद्ध के लिए कर सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग मनोवैज्ञानिक युद्ध के लिए भी किया जाता है। विभिन्न देशों की सेनाएँ और आतंकवादी संगठन प्रचार अभियानों के लिए फेसबुक, ट्विटर, और टेलीग्राम जैसे माध्यमों का उपयोग करते हैं। इससे जनमत को प्रभावित किया जाता है और दुश्मन की नैतिक शक्ति को कमजोर करने की कोशिश की जाती है। इस बढ़ते खतरे को देखते हुए विभिन्न देशों की सेनाएँ सोशल मीडिया उपयोग के लिए कठोर दिशा–निर्देश लागू कर रही हैं। सैनिकों को प्रशिक्षित किया जाता है कि वे संवेदनशील सूचनाएँ साझा न करें और साइबर सुरक्षा उपायों का पालन करें। सोशल मीडिया का सैनिक अभियानों और सुरक्षा पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। इसका जिम्मेदार उपयोग आवश्यक है ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और गलत सूचना के प्रसार को रोका जा सके।

सेना को सोशल मीडिया से लाभ होता है क्योंकि यह सैनिकों को विभिन्न प्रकार के विषयों पर अपनी बात रखने का अवसर देता है। उदाहरण के लिए, लड़ाकू बल में सुधार जारी रखने के लिए, सेना सैनिकों के सुझावों को आमंत्रित कर सकती है और उनका उपयोग सिस्टम और प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए कर सकती है या सैनिक तुरंत अपने मित्रों, परिवार और आम जनता को सेना के संदेश भेज सकते हैं और उनका समर्थन कर सकते हैं। सोशल मीडिया संचार चैनल भी खोलता है, वही दूसरी ओर, मीडिया सेना पर अनावश्यक रूप से गोपनीयता बरतने का आरोप लगाता है। आपसी संवेदनशीलता की आवश्यकता है। मीडिया की मजबूरियों और सीमाओं को समझते हुए, सेना के चरित्र और कार्यप्रणाली के बारे में उसे शिक्षित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए कमजोरियों को स्वीकार करते हुए, ईमानदारी से मीडिया के साथ जानकारी साझा की जानी चाहिए। उन्हे अच्छी तरह से सभी सुचनाओं को सूचित करना चाहीए ताकि मीडिया सेना को बदनाम करने वाले भ्रमित एवं दुष्प्रचारित करने वाले वीडियो का शिकार न हो। जिससे सैनिकों को वर्तमान और भविष्य के कार्यक्रमों और नीतियों पर सेना के अपडेट तक पहुँचने की अनुमति मिलती है। जिसके लिए तीन कदम उठाए जा सकते हैं। पहला, यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने चाहिए कि समय–परीक्षणित मानव प्रबंधन मानदंडों को संतुष्टि में सुधार और शिकायतों को कम करने के लिए अतिरिक्त महत्व दिया जाए। दूसरा, अच्छी तरह से स्थापित शिकायत निवारण तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए और अधिक विश्वसनीय बनाया जाना चाहिए। तीसरा, नकारात्मक नतीजों को रोकने के लिए सेना में मामलों की वास्तविक स्थिति के बारे में लोगों को अवगत कराया जाना चाहिए। बदले हुए माहौल

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: May 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

में नेतृत्व तकनीकों में बदलाव की आवश्यकता होती है। नेताओं को सैनिकों से अधिक करुणा से पेश आना सीखना होगा। करुणा का मतलब अनुशासन को कमजोर करना नहीं है। इसके विपरीत, एक दयालु नेता नैतिक अधिकार प्राप्त करता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया आमने–सामने के नेतृत्व की जगह नहीं लेता है, हालाँकि, यह व्यक्तिगत सैनिकों तक पहुँचने में लगने वाले संचार के समय को कम करता है।

सोशल मीडिया का सैन्य अभियानों (संक्रियां) पर प्रभाव

सोशल मीडिया आज के समय में सैन्य अभियानों पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। यह न केवल सूचना प्रसार का एक प्रमुख साधन बन गया है, बल्कि युद्ध रणनीति, सैनिकों की सुरक्षा और जनमत निर्माण पर भी असर डाल रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से संवेदनशील सैन्य सूचनाएँ लीक होने का खतरा बढ़ गया है। सैनिकों द्वारा पोस्ट की गई तस्वीरें, स्थान टैगिंग, या लाइव वीडियो से विरोधी पक्ष को अहम जानकारी मिल सकती है, जिससे सैन्य अभियानों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। सोशल मीडिया युद्धों में मनोवैज्ञानिक रणनीति का अहम हिस्सा बन चुका है। विरोधी पक्ष झूठी खबरें, प्रचार और दुष्प्रचार फैलाकर लोगों की सोच और भावनाओं को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। इससे सैनिकों के मनोबल पर भी प्रभाव पड़ सकता है। सोशल मीडिया के माध्यम से साइबर हमलों का खतरा बढ़ गया है। हैकिंग, डेटा चोरी और फेक न्यूज के जरिए दुश्मन देश की सेना और सरकार को कमजोर करने की कोशिशें की जाती हैं।

सेना, जनसंपर्क प्रमुख के कार्यालय ने बताया कि सोशल मीडिया की लोकप्रियता बढ़ने के साथ ही ऑपरेशन सुरक्षा एक प्राथमिक चिंता का विषय है। जियोटैगिंग के माध्यम से अपना स्थान पोस्ट करने की आदतें, जो वास्तविक समय में उपयोगकर्ता के स्थान को साझा करती हैं, जो सैन्य नियमों के उल्लंघन का कारण बन सकती हैं और मिशन को खतरे में डाल सकती हैं। आतंकवादी भविष्य के हमलों के लिए जानकारी एकत्र करने के लिए सैनिकों का ऑनलाइन अनुसरण कर सकते हैं। जब सैनिक स्थान और योजनाएँ साझा करते हैं, तो वे व्यक्तिगत और पारिवारिक सुरक्षा को जोखिम में डालते हैं। सैन्य पहचान सम्बन्धी जानकारी जैसे रैंक, नाम और मूवमेंट की तारीखों को उपकरणों के प्रकार और क्षमताओं के अलावा ऑनलाइन पोस्ट नहीं किया जाना चाहिए। चोर सैनिकों के सोशल मीडिया पोस्ट का अनुसरण करके यह निर्धारित कर सकते हैं कि कब घर लूटना है या दुर्भावनापूर्ण इरादे से घात लगाना है। हॉलहि में कई हनी ट्रैप कि घटनाए सामने आयी है। जो सोशल मीडिया के माध्यम से ही कि गयी थी।

परिचालन, व्यक्तिगत और पारिवारिक सुरक्षा में सहायता के लिए, उपयोग में आने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जियोटैगिंग फंक्शन को अक्षम किया जाना चाहिए। जैसा कि हाल ही में फिटबिट के जियोटैगिंग सुरक्षा मुद्दे ने प्रदर्शित किया, सैनिकों के स्थान जियोटैगिंग के माध्यम से ऑनलाइन पाए जा सकते हैं। व्यक्तिगत कदाचार सेना के मूल्यों, अनुशासन और संस्कृति पर बुरा प्रभाव डालता है। कदाचार से लोगों की सेना के प्रति सोच और संभावित भर्तियों और उनके परिवार के सदस्यों की मानसिकता पर असर पड़ेगा तथा बोले गए शब्द समय के साथ फीके पड़ सकते हैं। हालाँकि, सोशल मीडिया पोस्ट हमेशा के लिए बने रहते हैं, डिलीट होने के बाद भी। किसी घाव को फिर से पोस्ट करने और फिर से खोलने के लिए बस एक व्यक्ति की जरूरत होती है। सैनिकों को सतर्क रहने और अपनी गलतियों से सीखने की जरूरत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें दूसरों की गलतियों से सीखना चाहिए।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने सशस्त्र सेनाओं के संचार, संचालन और सुरक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। यह आधुनिक युद्ध रणनीतियों, जनसंपर्क और सूचना प्रसार का एक प्रभावी माध्यम बन चुका है। सैन्य संगठन इसका उपयोग न केवल आधिकारिक घोषणाओं और संकट प्रबंधन के लिए कर रहे हैं, बल्कि सैनिकों की भर्ती, मनोबल बढ़ाने और नागरिक सहभागिता के लिए भी कर रहे हैं।

हालाँकि, सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के साथ कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। गोपनीय सैन्य जानकारी के लीक होने, साइबर हमलों और दुष्प्रचार अभियानों का खतरा लगातार बढ़ रहा है। विरोधी शक्तियाँ सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचनाएँ फैलाकर मनोवैज्ञानिक युद्ध का संचालन कर सकती हैं, जिससे सैनिकों और आम जनता की धारणा प्रभावित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, सैनिकों द्वारा अनुचित सोशल मीडिया उपयोग से सैन्य अनुशासन पर

नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, सशस्त्र सेनाओं को एक मजबूत सोशल मीडिया नीति अपनाने की आवश्यकता है। साइबर सुरक्षा उपायों को सख्त करना, सैनिकों को डिजिटल साक्षरता और सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार के प्रति जागरूक करना आवश्यक है। इसके अलावा, सोशल मीडिया की निगरानी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण तकनीकों का उपयोग करके सम्भावित खतरों का शीघ्र पता लगाने की रणनीति विकसित की जानी चाहिए।

अंततः, सोशल मीडिया सशस्त्र बलों के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, यदि इसे सतर्कता, अनुशासन और रणनीतिक दृष्टिकोण के साथ उपयोग किया जाए। इसके सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाने और नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए निरंतर निगरानी और नीतिगत सुधार आवश्यक हैं।

सन्दर्भ सूची

1- Ferrara, E. (2015), Manipulation and abuse on social media ar Xiv preprint ar Xiv:1503.03752. https://arxiv.org/abs/1503.03752
2- Sarkar, S., Shakarian, P., Armenta, M., Sanchez, D., & Lakkaraju, K. (2019), Can social influence be exploited to compromise security: An online experimental evaluation, arXiv preprint arXiv:1909.02872. https://arxiv.org/abs/1909.02872
3- Garcia-Bernardo, J., Qi, H., Shultz, J. M., Cohen, A. M., Johnson, N. F., & Dodds, P. S. (2015), Social media affects the timing, location, and severity of school shootings. arXiv preprint arXiv:1506.06305. https://arxiv.org/abs/1506.06305
4- Chavalarias, D., Bouchaud, P., & Panahi, M. (2023). Can few lines of code change society? Beyond fact-checking and moderation: How recommender systems toxify social networking sites. arXiv preprint arXiv:2303.15035. https://arxiv.org/abs/2303.15035
5- Sharma, H. S. (2024). Social Media: An Effective Weapon for the Youth Generation. RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary, 9(11), 110-113. https://www.rrjournals.com/index.php/rrijm/article/view/1627
6- Kaplan, A. M., & Haenlein, M. (2010). Users of the world, unite! The challenges and opportunities of social media. Business Horizons, 53(1), 59-68,
7- Taddeo, M. (2012). Information warfare: A philosophical perspective. Philosophy & Technology, 25(1), 105-120.
8- Bayerl, P. S., & Akhgar, B. (2015). The role of social media in crisis communication: A behavioral perspective. In Application of Social Media in Crisis Management (pp. 41-56). Springer.
9- Cohen, H., & Bar-Nir, D. (2017). The role of social media in the military: A case study of the Israeli Defense Forces. Journal of Public Affairs, 17(3), e1625.
10- Kavanagh, J., & Rich, M. D. (2018). Truth Decay: An initial exploration of the diminishing role of facts and analysis in American public life. RAND Corporation.
11- Lachow, I. (2009). Cyber terrorism: Menace or myth? In Cyberpower and National Security (pp. 437-464). Potomac Books.
12- Miller, G. (2010). Social scientists wade into the tweet stream. Science, 328(5985), 30-31.
13- Prier, J. (2017). Commanding the trend: Social media as information warfare. Strategic Studies Quarterly, 11(4), 50-85.
14- Singer, P. W., & Brooking, E. T. (2018). LikeWar: The weaponization of social media. Houghton Mifflin Harcourt.
15- Stieglitz, S., Mirbabaie, M., Ross, B., & Neuberger, C. (2018). Social media analytics–Challenges in topic discovery, data collection, and data preparation. International Journal of Information Management, 39, 156-168.